

श्रीशिवस्तुतिः वन्दे शिवं
 वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारुणं
 वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
 वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
 वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १ ॥

पार्वतीपति भगवान् शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ, देवताओंके
 गुरु तथा सृष्टिके कारणरूप परमेश्वर भगवान् शंकरको मैं
 प्राणाम करता हूँ, नागोंको आभूषणके रूपमें तथा छाथमें मृगमुद्रा
 धारण करनेवाले एवं समस्त जीवोंके गुरुस्वामी भगवान् शंकरको
 मैं नमस्कार करता हूँ, नमस्कार करता हूँ । सूर्य, चन्द्र और
 अग्निदेवको नेत्ररूपमें धारण करनेवाले भगवान् नारायणके परम प्रिय
 भगवान् शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ । भक्त-जनोंको आश्रय
 देनेवाले वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान् शंकरको मैं प्राणाम करता
 हूँ ॥ १ ॥

वन्दे सर्वजगद्भिन्नरमतुलं वन्देऽन्धकध्वंसिनं
 वन्दे देवशिखामणिं शशिनिभं वन्दे उरेर्वल्लभम् ।
 वन्दे नागभुजङ्गभूषणधरं वन्दे शिवं यिन्मयं
 वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ २ ॥

जिनके विदारकी पूरे विश्वमें कोई तुलना नहीं है, जैसे अतुलनीय विदारी
 भगवान् शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ । अन्धकासुरके उन्ता भगवान्
 शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ । जो सभी देवताओंके शिरोमणि हैं,
 जिनकी कान्ति चन्द्रमाके समान है, जिन्होंने अपने शरीरपर नागों
 और सर्पोंको आभूषणके रूपमें धारण कर रखा है और जो भगवान्
 विष्णुको अत्यन्त प्रिय अपने भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले हैं, जैसे
 वरदानी परम कल्याणस्वरूप विद्वानन्द भगवान् शंकरको मैं प्राणाम
 करता हूँ ॥ २ ॥

वन्दे दिव्यमयिन्त्यमदयमलं वन्देऽर्कदर्पापलं
 वन्दे निर्मलमादिमूलमनिशं वन्दे मध्वंसिनम् ।
 वन्दे सत्यमनन्तमाधमभयं वन्देऽतिशान्ताकृति
 वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ३ ॥

अयिन्त्य शक्तिसे सम्पन्न, दिव्य लोकोत्तर, अध ब्रह्मस्वरूप भगवान्
 शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ । सूर्यके अभिमानका दहन करनेवाले,
 निर्मल स्वरूपवाले, विश्वके मूल कारण भगवान् शंकरकी मैं सतत
 वन्दना करता हूँ । जो दक्ष प्रजापतिके यज्ञको नष्ट करनेवाले
 तथा शान्त आकृतिवाले, सत्यस्वरूप, अनन्तस्वरूप, आधस्वरूप और
 सदा निर्भय रहनेवाले एवं भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले हैं, जैसे
 वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान् शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

वन्दे भूरथमम्बुजाक्षविशिषं वन्दे श्रुतित्रोटकं

वन्दे शैलशरासनं झीणैर्गुणं वन्देऽधितुणोरकम् ।
वन्दे पद्मञ्जसारथिं पुरुरं वन्दे मलाभैरवं
वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ४॥

त्रिपुरासुरको दग्ध करनेके लिये पृथ्वीको रथ, ब्रह्माको सारथि,
सुमेरु पर्वतको धनुष, श्रुतिको त्रोटक, शेषको प्रत्यंघा,
आकाशको तूणीर और कमलनयन भगवान विष्णुको आगु बनानेवाले,
मलाभैरव रूपधारी, भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले तथा वरदानी
कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ ॥ ४॥

वन्दे पञ्चमुष्ण्मण्डुं त्रिनयनं वन्दे ललाटेक्षणं
वन्दे व्योमगतं जटासुमुकुटं यन्द्रार्धगङ्गाधरम् ।
वन्दे भस्मकृतत्रिपुरदुष्टिलं वन्देष्टपूर्त्यात्मकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ५॥

जो पाँच मुखवाले हैं तथा जो अघोर, सधोजात, तत्पुरुष,
वामदेव और ईशानसंज्ञक हैं, उन कमलके समान मुखवाले
भगवान शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ । जिनके तीन नेत्र हैं,
जिनका अग्निरूप नेत्र ललाटमें है, जैसे भगवान शंकरको मैं प्राणाम
करता हूँ । अपने मस्तकपर भगवती गंगा और अर्ध यन्द्रमाको तथा
सिरपर मुकुटके रूपमें सुन्दर जटाको धारण किये हैं, जैसे आकाशकी
तरङ्ग व्यापक भगवान शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ । जिन भगवान
शंकरकी पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, सूर्य और
यन्द्र मतान्तरसे शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति,
ईशान और मलादेव नामक आठ मूर्तियाँ हैं, जैसे उन भस्मनिर्मित
त्रिपुरदुष्टको जटाके रूपमें धारण करनेवाले भगवान शंकरको मैं
प्राणाम करता हूँ । जो भक्त-जनोंके आश्रयदाता हैं, उन वरदानी
कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्राणाम करता हूँ ॥ ५॥

वन्दे कालहरं हरं विषधरं वन्दे मृडं धूर्जटिं
वन्दे सर्वगतं दयामृतनिधिं वन्दे नृसिंहापडम् ।
वन्दे विप्रसुरायिताङ्घ्रिकमलं वन्दे भगाक्षापडं
वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ६॥

जो कालको छतनेवाले, पापका हरण करनेवाले, कण्ठमें विषको धारण
करनेवाले, सुभ देनेवाले तथा जटामें गंगाजोको धारण करनेवाले
व्यापक, दयारूपी अमृतके निधि हैं और शरभरूप धारणकर
नृसिंहको लेकर आकाशमें उड़नेवाले हैं एवं जिनके यरणकमलोंको
वन्दना ब्राह्मण एवं देवता भी करते हैं, जिनोंने भगाक्ष (ईन्द्र)
-के दुःखका निवारण किया है तथा जो भक्तोंको आश्रय देनेवाले और
वरदानी हैं, जैसे उन कल्याणस्वरूप भगवान शिवको मैं प्राणाम करता
हूँ ॥ ६॥

वन्दे मङ्गलराजताद्रिनिलयं वन्दे सुराधीश्वरं

वन्दे शङ्करमप्रमेयमतुलं वन्दे यमद्रोषिणम् ।
वन्दे कुण्डलिराजकुण्डलधरं वन्दे सलस्त्राननं
वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ७॥

जो याँटीके समान शुभ्र एवं मांगलिक हिमालय पर्वतपर रहते हैं,
जो सलस्त्र (अनन्त) -मुण्णवाले हैं, जो सभी देवताओंके स्वामी हैं, जो
कल्याण करनेवाले, अप्रमेय और अतुलनीय हैं एवं शेषनागको जिन्होंने
कानोंका कुण्डल बनाया है, यमको पराजित किया है, भक्त-जनोंको
आश्रय देनेवाले वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं प्रणाम
करता हूँ ॥ ७॥

वन्दे लंसमतीन्द्रियं स्मरुदरं वन्दे विज्ञेक्षणं
वन्दे भूतगाणेशमव्ययमलं वन्देऽर्थराज्यप्रदम् ।
वन्दे सुन्दरसौरभेयगमनं वन्दे त्रिशूलायुधं
वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ८॥

जो सूर्यस्वरूप और इन्द्रियोंसे परे हैं, जो कामदेवको भस्म करनेवाले
हैं, जो तीन नेत्र होनेके कारण विज्ञेपाक्ष कहे गये हैं, जो सर्वथा
अविनाशी हैं, जो धन और राज्यके प्रदाता हैं तथा भूतगाणोंके स्वामी
हैं, जो सुन्दर वृषवाहनपर आइठ्ठ् लोकर चलते हैं, त्रिशूल
ही जिनका आयुध है, ऐसे जो भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले वरदानी
कल्याणस्वरूप भगवान शंकर हैं, उनको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८॥

वन्दे सूक्ष्ममनन्तमाधमभयं वन्देऽन्धकारापलं
वन्दे झलननन्दिभृङ्गिगविनतं वन्दे सुपार्णवृतम् ।
वन्दे शैलसुतार्धभागवपुषं वन्देऽभयं त्र्यम्बकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ९॥

उन मछाशिवको प्रणाम है जो सूक्ष्म हैं, अनन्त हैं, जो सबके आधे
हैं और जो निर्भीक हैं; जिन्होंने अन्धकासुरका वध किया है, जिन्हें
झलन, नन्दी और भृंगी प्रणाम अर्पित करते हैं, जो सुपार्णों
(कैमलिनियों) -से आवृत हैं, जिनके आधे शरीरमें शैलसुता पार्वती
हैं, जो भक्तोंको निर्भीक करनेवाले हैं, जिनके तीन नेत्र हैं । जो
भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले एवं वरदानी हैं, ऐसे कल्याणस्वरूप
भगवान शंकरको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९॥

वन्दे पावनमम्भरात्मविभवं वन्दे महेन्द्रेश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयामरतरुं वन्दे नताभीष्टदम् ।
वन्दे जङ्घसुताम्भिकेशमनिशं वन्दे गार्गाधीश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयं य वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १०॥

जिनका आत्मविभव परम पावन है और आकाशकी तरह व्यापक है,
जो देवराज इन्द्रके भी स्वामी हैं, जो भक्तजनोंके लिये कल्पवृक्षके
समान आश्रय हैं, जो प्रणाम करनेवालोंको भी अभीष्ट झल प्रदान

करते हैं, जिनकी एक पत्नी गंगा और दूसरी पार्वती हैं और जो अनेक
प्रमुख गणोंके भी स्वामी हैं, जैसे भक्त-जनोंको आश्रय देनेवाले
वरदानी कल्याणस्वरूप भगवान शंकरको मैं निरन्तर प्रणाम करता
हूँ ॥ १०॥

॥ इति श्रीशिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ इस प्रकार श्रीशिवस्तुति सम्पूर्ण हुई ॥

Proofread by Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com